P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-12*August- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जोधपुर एवं भटनेर दुर्ग की स्थापत्य कला

चोथू राम
रिसर्च स्कॉलर,
इतिहास विभाग,
म.द.स. विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान

सारांश

राठौड़ो की शूरवीरता एवं प्रजावत्सलता का यशोगान करता मेहरानगढ़ (जोधपुर) दुर्ग भारत के सुदृढ़ दुर्गों में एक माना जाता है। 400 फीट ऊँची चिड़िया टूक पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग का प्रवेश द्वार जयपोल है । इसके दाहिनी ओर लिफ्ट के सामने महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश है। यह एक शोधकेन्द्र है जिसमें 5000 से अधिक पाण्डूलिपियां तथा ताड़–पत्रों पर हस्तलिखित ग्रंथ तथा अनेक आधुनिक पुस्तके हैं।

दुर्ग के भीतर चामुण्डा माता व नागणेचिया माता के मंदिर हैं। अन्य आस्था स्थलों में मुरलीमनोहर जी का मंदिर, आनन्द घन जी का मंदिर, चिड़ियानाथ जी की धूणी, शहीद भूरे खाँ की मजार, काला गौरा भैरूजी, व मल्लिनाथ जी का थान प्रमुख है स्थापत्य के अन्य नमूनों में दौलतखाना, फूल महल, अजीत विलास, उम्मेद विलास, शीशमहल, दीपक महल, तख्त विलास महल व मोती महल प्रमुख है।

घग्घर नदी के मुहाने पर बसे भटनेर दुर्ग को उतरी सीमा का प्रहरी कहा जाता है। दुर्ग की चार भुजाओं पर बने 12 बुर्ज तथा चारों कोनों पर बने एक–एक बुर्ज को मिलाकर कुल 52 बुर्ज हैं, जो इसको सुरक्षा प्रदान करते हैं। बाहर की समतल भूमि से किले का मुख्य प्रवेश द्वार है, जो लोहे के चद्दरों से बना हुआ है एक मजबूत दरवाजा है। यह दरवाजा हाथियों के आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करता था। प्रवेशद्वार के ठीक सामने हनुमान जी का मंदिर है । स्थापत्य के अन्य नमूनों में शिव मंदिर, जैन मंदिर, मुरलीमनोहर मंदिर, कृष्ण मंदिर, रामदेवजी मंदिर व करनी माता के मंदिर आदि प्रमुख हैं।

मुख्य शब्द : मेहरानगढ़ (जोधपुर) दुर्ग, भटनेर दुर्ग, घग्घर नदी।

प्रस्तावना

राजस्थान की वीरभूमि में दुर्ग निर्माण की परम्परा प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। बाह्या शत्रु आक्रमणों से बचाव, गोला–बारूद, हथियारों को सुरक्षित रखने तथा रसद सामग्री के संचय करने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। दुर्ग की नींव राजगुरू की सलाह पर तिथि, दिन एवं स्थान को देखकर वास्तुशास्त्र के अनुसार रखी जाती थी।[1]

राठौड़ो की शूरवीरता व प्रजा वत्सलता का यशोगाान करता मेहरावगढ़ (जोधपुर) राजस्थान ही नहीं अपितु भारत के सुदृढ़ दुर्गो में एक माना जाता है। राव जोधा ने इस दुर्ग की नींव वि.स. 1515 की ज्येष्ठ सूदी 11, शनिवार (12 मई, 1459 ई.) को रखी व जोधपुर शहर बसाया। किले की स्थापना के समय इसका नाम चिन्तामणिगढ़ रखा गया था। मयूराकृति होने के कारण मयूरध्वजगढ़ कहा गया, जबकि इसका प्रसिद्ध नाम मेहरानगढ़ है।[2]

400 फीट ऊँची चिड़िया टूक पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग दूर से देखने पर किसी पहाड़ी पर मुकुट के समान दिखाई पड़ता है। दुर्ग का मुख्य प्रवेश द्वारा जयपोल है। जयपोल के दाहिनी और लिफ्ट के सामने महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश है, जिसकी स्थापना महाराजा मानसिंह ने 1805 ई. में की थी। यह एक शोध केन्द्र है जिसमें 5000 से अधिक पाण्डूलिपियां तथा ताड़–पत्रों पर हस्तलिखित ग्रंथ तथा कई आधुनिक पुस्तके हैं।[3]

दुर्ग के भीतर चामुण्डा माता व नागणेचिया माता के मन्दिर के बीच सलेम कोट है, जो बन्दीगृह था। दुर्ग के भीतर के अन्य आस्था स्थलों में मुरलीमनोहर जी का मन्दिर, आनन्द धन जी का मन्दिर, चिड़ियानाथ जी की धूणी, झरनेश्वर मंदिर, काला–गौरा भैरूजी, भैरू पोल वाले भैंरूजी, चौकेलाव वाले भैंरूजी, शहीद भूरे खाँ का मजार व रावत मल्लिनाथ जी का थान प्रमुख हैं। स्थापत्य के अन्य नमूनों में दौलतखाना, कंवरपदे महल, फूल महल, अजीत विलास, तख्त विलास महल, उम्मेद विलास, शीशमहल, दीपक महल, मोती महल आदि प्रमुख है।[4]

लोहा पोल के पार्श्व में महाराजा अजीत सिंह द्वारा निर्मित इनकी 10 खम्भों की स्मारक छतरी विद्यमान है जिस पर ये पंक्तियाँ उत्कीर्ण हैं –

आजूणी अधरात, महलज रूनी मुकन री।
पातल री परभात, भली रूवाणी भीवंड़ा।।[5]

लाल पत्थरों से निर्मित और अलकृंत जालियों व झरोखों से सुशोभित इस किले के महल राजपूत स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण है। इनमें महाराजा सूरसिंह द्वारा वि.स. 1602 में निर्मित मोतीमहल सुनहरी अलंकरण व सजीव चित्रांकन के लिए प्रसिद्ध है। इसकी छत व दीवारों पर सोने की पॉलिश का बारीक काम महाराज तख्तसिंह द्वारा करवाया गया। इसी तरह महाराजा अभयसिंह द्वारा वि.स. 1781 में निर्मित फूल महल पत्थर पर बारीक खुदाई और कोराई के लिए प्रसिद्ध है। दौलतखाने के आंगन में महाराजा तखतसिंह द्वारा विनिर्मित सिणगार चौकी (श्रृंगार चौकी) है जहाँ जोधपुर के राजाओं का राजतिलक होता था। आनन्द धन जी के मन्दिर में बिल्लोर पत्थर की पाँच भव्य और सजीव प्रतिमायें प्रतिष्ठापित हैं। इसके अलावा दुर्ग के भीतर राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी का मंदिर भी विद्यमान है।[6]

जोधपुर का यह भव्य दुर्ग अपने लिए कही गयी निम्न उक्ति को चरितार्थ करता हुआ शान से खड़ा है –

सब ही गंढ़ा सिरोमणि, अति ही ऊंचो जाण।
अनड़ पहाडां ऊपरै, जबरो गढ़ जोधाणा।।[7]

घग्घर नदी के मुहाने पर बसे भटेनर दुर्ग को उत्तरी सीमा का प्रहरी कहा जाता है, क्योंकि मध्य एशिया से होने वाले आक्रमणों का प्रतिरोद्ध इसी दुर्ग के द्वारा किया गया। दुर्ग का निर्माण युवराज भूपति ने सन् 286 ई. में करवाया तथा अपने पिता राजा भाटी के नाम पर इसका नाम भटनेर रखा। भटनेर का अर्थ भाटियों का गढ़। मुस्लिम लेखक इसे 'तबरहिन्द' भी कहते हैं।[8]

भारत की उत्तरपश्चिम सीमा का पहरेदार सुप्रसिद्ध भटनेर दुर्ग अब लगभग नष्ट हो चुका है, तथा जीर्ण शीर्ण अवस्ता में है। यह समानान्तर चतुर्भुज के समान आकार में बावन वर्ग बीघा क्षेत्र में पकी हुई ईंटों की चूने से चिनाई करके बनाया गया। किले की चार भुजाओं पर बने 12 बुर्ज तथा चारों कोनों पर बने एक–एक बुर्ज मिलकार कुल 52 बुर्ज हैं जो इसको सुरक्षा प्रदान करते हैं। इसकी परिवेष्ठिनी में कुल 6380 कंगूरे हैं।[9]

बाहर की समतल भूमि से किले का मुख्यद्वार एक सौ फिट की ढलुआँ चढ़ाई पर है। यहीं पर लोहे के चद्दरों से बना हुआ एक मजबूत दरवाजा है। यह दरवाजा हाथियों के आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करता था। दरवाजा इतना मजबूत है कि आज भी सुरक्षित एवं सही सलामत है। मुख्य द्वार से प्रवेश करने पर ठीक सामने लगभग 100 मीटर हनुमान जी का मन्दिर है। इस मन्दिर का निर्माण 1805 ई. में बीकानेर शासको ने दुर्ग जीतने की खुशी एवं ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त करने हेतु कराया था। दुर्ग के अन्दर माता जी के मंदिर, शिव मंदिर, जैन मंदिर आदि प्रमुख हैं। यहीं पर 16 वें जैन तीर्थंकर का जैन मंदिर भी दर्शनीय है। इन मंदिरो के पास ही मुरली मनोहर मंदिर एवं कृष्ण मंदिर भी हैं। कृष्ण मंदिर से बायीं तरफ चलने पर थोड़ी दूरी पर रामदेव मंदिर व करनी माता के मंदिर हैं।[10]

मध्यकाल में किले का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में देखता हुआ था जिसे बीकानेर शासकों के चायलों पर आक्रमण के समय तोप से उड़ाकर नष्ट कर दिया गया था। वर्तमान में मुख्य द्वार पूर्व दिशा में देखता हुआ है तथा मुख्य सड़क से कुछ ऊँचायी पर चढ़ने पर दिखाई देता है। इसकी छत मेहराबदार है तथा उस पर सैनिकों के बैठने, गोलियाँ चलाने आदि के स्थान बने हुए हैं जो द्वार की रक्षा हेतु बनाए गये थे। द्वार के समीप ही दायें हाथ पर किले की मुख्य दीवार पर बने हुए बुर्जों पर बैठकर सैनिक द्वार की रक्षा करते थे।[11]

भटनेर का यह दुर्ग, 'उत्तर भड़ किंवाड़' के यशस्वी विरूद्ध धारी भाटियों तथा राठौड़ों की अनेक गौरव गाथाओं को अपने समेटे तथा अतीत की अनमोल ऐतिहासिक–सांस्कृतिक धरोहर को संजोए हुए है।[12]

वर्तमान में यह किला भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की देखरेख में है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के जयपुर मण्डल ने अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर भटनेर दुर्ग के महत्व को दर्शाने हेतु 18 अप्रैल 2010 को विश्वदाय दिवस भटनेर किला हनुमानगढ़ में मनाया।[13]

शोध के उद्देश्य

1. मरूस्थलीय दुर्गों में –मेहरानगढ़ (जोधपुर) एवं भटनेर दुर्गों की स्थापत्य कला के महत्व को उजागर करना।
2. मेहरानगढ़ व भटनेर दुर्ग की स्थापत्य कला का अध्ययन वर्तमान प्रासंगिकता के सन्दर्भ में करना।
3. मेहरानगढ़ व भटनेर दुर्गों की स्थापत्य कला का अध्ययन सामरिक उपयोगिता की दृष्टि से करना।
4. मेहरानगढ़ व भटनेर दुर्ग की स्थापत्य कला का अध्ययन वर्तमान सामरिक सुरक्षा के सन्दर्भ में करना।

साहित्यावलोकन

शर्मा, गोपीनाथ, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, इसके अध्ययन से जोधपुर एवं भटनेर दुर्गों की प्रारम्भिक जानकारी मिलती है।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार –बीकानेर, प्रवेशांक–627, बस्ता 58, ग्रंथिका–17, की जानकारी से भी उक्त दुर्गों की प्रारम्भिक जानकारी मिलती है। मिश्र, डॉ. रतनलाल ''दि फोर्ट्स ऑफ राजस्थान'' कुटीर प्रकाशन मंडावा, झुन्झुनूं, 1985 ई. व रेउ, पं. विश्वेश्वर, नाथ मारवाड़ का इतिहास राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, 1999 ई., भाग–1, आदि के अवलोकन से उक्त देानो दुर्गों की स्थापत्य कला की जानकारी मिलती है।

दुबे, दीनानाथ ''भारत के दुर्ग'' सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, 1999 ई. (द्वितीय संस्करण) के अध्ययन से भी मेहरानगढ़ व भटनेर दुर्ग की स्थापत्य कला की जानकारी मिलती हैं। भटनेर दुर्ग, हनुमानगढ़, पर्यटक सूचना फोल्डर, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, 2010 ई. के गहन अध्ययन से भटनेर दुर्ग की स्थापत्य कला की जानकारी मिलती है। मनोहर, डॉ. राघवेन्द्र सिंह, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर , 2016, (पृ.

61,64) के समीक्षात्मक अध्ययन से जोधपुर (मेहरानगढ़) दुर्ग की स्थापत्य कला की जानकारी मिलती है।

उपर्युक्त पूर्व में किये गये कार्यों से इस शोध कार्य को एक दष्टि प्राप्त होगी। प्रस्तुत शोधकार्य पूर्णतया नवीनतम और मौलिक है जिसपर अभी तक कोई शोध नहीं हुआ है।

निष्कर्ष

प्रस्तावित अध्ययन में मेहरानगढ़ (जोधपुर) एवं भटनेर दुर्ग की स्थापत्य कला का अध्ययन किया गया है। जोधपुर दुर्ग में महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश एक शोध के केन्द्र है। दुर्ग के अन्दर चामुण्डा माता, नागणेचिया माता, के मंदिर हैं। दौलतखाना, फूलमहल, उम्मेद विलास, शीशमहल, तख्त विलास महल आदि स्थापत्य कला के नमूने हैं।

घग्घर नदी के मुहाने पर भटनेर दुर्ग स्थित है। यह दुर्ग समानान्तर चतुर्भुज के आकार में पकी हुई ईटों से बनाया गया है। किले की भुजाओं एवं चारों कोनों पर 52 बुर्ज बने हुए हैं, जो इसको सुरक्षा प्रदान करते हैं। दुर्ग का मुख्य प्रवेश द्वार, लोहे के चद्दरों से बना हुआ एक मजबूत दरवाजा है, जो हाथियों के आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान करता था। प्रवेश द्वार के ठीक सामने हनुमान जी का मंदिर है । अन्य मंदिरों में शिव मंदिर, जैन मंदिर, कृष्ण मंदिर, रामदेव जी मंदिर व करणीमाता के मंदिर प्रमुख हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *औझा, रायॅ बहादुर, पं. गौरी शंकर हीराचंद, जोधपुर राज्य का इतिहास वैदिक यत्रांलय अजमेर, 1927 ई., पृं.–75*
2. *राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, प्रवेशांक 627, बस्ता 58, ग्रंथिका–17, पृं.–4*
3. *कोठारी, गुलाब, पत्रिका इयर बुक, पूर्वोक्त, पृं.–744*
4. *व्यक्तिगत सर्वेक्षण (मेहरानगढ़) जोधपुर दुर्ग।*
5. *भाटी, नारायण सिंह (सं.) महाराजा मानसिंह री ख्यात, राजस्थान ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, जोधपुर, 1997ई., पृं. –56*
6. *भाटी, हरिसिंह, भटनेर का इतिहास, कवि प्रकाशन बीकानेर, 2000, ई. , पृं.–84*
7. *मिश्र, रतनलाल, राजस्थान के दुर्ग, साहित्यागार, जयपुर, 2008 ई., पृं.–65*
8. *भटनेर दुर्ग–हनुमानगढ़, पर्यटक सूचना फोल्डर, भारतीय पूरातत्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, 2010 ई., पृं.–1–5*
9. *शोध यात्रा, मेहरानगढ़ दुर्ग दिनांक 05.06.2015*
10. *मनोहर, डॉ. राघवेन्द्र सिंह, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2016 ई., पृं–63*
11. *मनोहर, डॉ. राघवेन्द्र सिंह, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2016 ई., पृं–124*